आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014–2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : तीसरा | जुलाई-2016

बाबा जी का आखिरी संदेश 5

महात्माओं का मिशन (सतसंग) 15

धैर्य रखें और वक्त का इंतजार करें 25

विदाई संदेश 29

सच और झूठ 32

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)
उप संपादक–नन्दनी

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
99 28 92 53 04
96 67 23 33 04

सहयोग– ज्योति सरदाना, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2016 -172- मूल्य - पाँच रुपये

ऐहे ते देश पराया ओऐ सजणा

ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना, पाया ओऐ सजणा,(2)
ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,

आया जो ऐत्थे, सबने तुर जाणा,
रहना ना ऐत्थे, कोई राजा राणा, (2)
जिंदगी बिरछ दी, छाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

कोई दिन ऐत्थे, रैण बसेरा,
झूठे सब नाते, कोई ना तेरा,(2)
सतगुरु ने, समझाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

करके सिमरन, मन समझा लै,
भुल्लां गुरु तों, माफ करा लै (2)
दाते दा नां क्यों, भुलाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

पल्ला गुरु, कृपाल दा फड़ लै,
भवसागर तों, 'अजायब' तूं तर लै, (2)
झूठा जगत, झूठी माया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

बाबा जी का आखिरी संदेश

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

जैसा कि आप सभी प्रेमियों को पता है कि हमारे प्यारे बाबा जी 6 जुलाई की रात 11 बजकर 55 मिनट पर अपना शारीरिक रूप त्यागकर अपने प्यारे गुरु कृपाल के पास चले गए हैं। बाबा जी हर क्षण अपने गुरु कृपाल की याद और तड़प में रहते थे।

दिल्ली में मई के कार्यक्रम के बाद जब बाबा जी 16 पी.एस आए तब से ही आपकी सेहत में कुछ न कुछ मामूली सी परेशानियां होती रही जोकि थोड़े से ईलाज से ठीक होती रही। गर्मी ज्यादा होने और सेहत कुछ खास ठीक न होने की वजह से आपने प्रेमियों से मिलना-जुलना भी सीमित कर दिया था।

6 जुलाई सुबह जब गुरमेल सिंह दवाई लेने रायसिंहनगर जा रहे थे उस समय बाबा जी ने कहा, ''मेरे दिल पर काफी बोझ है और कमजोरी की वजह से मैं इस साल विदेश का दूर नहीं कर पाऊंगा अगर हो सके तो फोन करके पप्पू को जानकारी दे दें।''

सुबह 9 बजे बाबा जी ने कहा कि हम रायसिंहनगर में डॉक्टर के पास जाकर टेस्ट करवा आएं अगर कोई शक है तो वह निकल जाए। रायसिंहनगर में डॉक्टर ने टेस्ट करके कहा कि सब ठीक है बस कमजोरी है और घर जाकर ग्लूकोज लगाने के लिए कहा। आश्रम पहुँचकर बाबा जी को ग्लूकोज लगाया गया और शाम को बाबा जी बिल्कुल ठीक हो गए।

शाम को 5.30 बजे पप्पू को बुलाकर कहा, ''मैं ठीक हूँ लेकिन कमजोरी की वजह से इस साल दूर नहीं कर सकूंगा। तुम प्रेमियों को जानकारी दे दो अगर कृपाल ने काम लेना है तो अगले

साल मई में प्रोग्राम करेंगे; बाकी एक दिन तो सबने पिंजरा खाली करके जाना है।'' उस समय बाबा जी बिल्कुल ठीक थे। बाबा जी 15-20 मिनट हमारे साथ हँसकर बात करते रहे और हमें भी हँसाते रहे। उस समय गुरमेल सिंह भी वहीं बैठे हुए थे।

रात को बाबा जी ने इच्छानुसार थोड़ा बहुत खाना खाया और नौ बजे लेट गए। आपने करीब 10.30 तक नींद ली और 10.30 बजे उठकर कहा कि मेरे कलेजे में जलन हो रही है। अजीत सिंह और निर्मल सिंह उस समय बाबा जी के पास ही थे, वे बाबा जी को बाथरूम ले गए। करीब 11.15 पर आपको साँस लेने में ज्यादा तकलीफ हुई तो गुरमेल सिंह को बुलाया गया। गुरमेल सिंह ने चेक किया सब कुछ नार्मल था। गुरमेल सिंह ने बाबा जी से पूछा, ''डॉक्टर के पास चलें?'' बाबा जी ने कहा, ''हाँ चलो! अब मेरी बस हो गई है।''

उसी समय बाबा जी को रायसिंहनगर डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने बाबा जी को चेक किया और जीभ दिखाने के लिए कहा। बाबा जी ने आँखें खोली और जीभ दिखाई। डॉक्टर ने हार्ट स्पैशिलिस्ट को बुलाया आक्सीजन लगाने के लिए ऑपरेशन थियेटर ले जाने लगे उसी क्षण बाबा जी ने सिमटाव कर लिया और परमपिता कृपाल में समा गए।

वैसे तो बाबा जी ने हमें हमेशा ही चेतावनी दी लेकिन हम लोग समझते हुए भी नहीं समझे। कुछ दिन पहले बाबा जी ने एक शब्द लिखा था। आप वह शब्द गुरमेल सिंह को देने लगे फिर आपने कहा कि अभी नहीं फिर देंगे। जब वही शब्द बलवन्त को पढ़कर सुनाया तब बलवन्त ने जो महसूस किया तो बाबा जी ने कहा कि ऐसी कोई बात नहीं। जो लोग मेरी सेहत के बारे में

भविष्यवाणियां करते हैं चिट्ठियां और टेलिग्राम भेजते हैं यह शब्द उनको शान्त करने के लिए लिखा है। ऐसा कहकर आपने बलवन्त को तो समझा दिया लेकिन आपने उस शब्द में जो कहा आप वही कर गए। वह शब्द इस तरह हैः

कौन कहे मैं मर जाणा है,
मैं तां कृपाल घर जाणा है,

लम्मां चौड़ा सागर जेहड़ा,
होले-होले तर जाणा है,

जीवन दी राह विच आई,
मौत मोई ने मर जाणा है,

जीवन दे नक्शे अंदर,
रंग सावन दा भर जाणा है,

वड्डी सारी उमरां भोगी,
रहना नहीं ऐं घर जाणा है,

कृपाल दी चर्चा होंणी है,
जा जीन्नां नाम जप जाणा है,

कोई मेरा राह ना रोके,
जाणा है सचमुच जाणा है,

तोरो मैनूं हसके तोरो,
अपने ही मैं घर जाणा है,

जद वी चाहेगा 'अजायब',
खाली पिंजर कर जाणा है,

बाबा जी ने इस समय का जिक्र करते हुए गुरमेल सिंह को बार-बार यह कहा, ''जिस तरह मैंने यहाँ पर सतसंग का कार्यक्रम चलाया है वैसे ही चलाना है। मैंने जो रास्ता बताया है उस पर श्रद्धा से चलते रहोगे तो परमात्मा कृपाल तुम्हें खुद ही राह बताएगा, किसी भी झमेले में मत पड़ना। जो भी प्रेमी यहाँ श्रद्धा से आएगा उसे वही फायदा होगा जो मेरे रहते हुए होता था।''

हम सब भाई-बहनों का यह फर्ज है कि हम बाबा जी का यह हुक्म मानें। यहाँ पर उसी तरह महावारी सतसंग का कार्यक्रम हुआ करेगा सभी प्रेमी श्रद्धा और प्रेम से आएं। सभी प्रेमी अपने-अपने घरों में अपनी-अपनी जगह पर जैसे पहले कार्यक्रम चलता था उसी तरह कार्यक्रम चलाएं, किसी झंझट में न पड़ें।

बाबा जी हमारे साथ हैं। जैसे बाबा जी ने कहा है अगर मेरे बताए रास्ते पर चलते रहोगे तो परमात्मा कृपाल तुम्हें खुद ही राह दिखाएगें। बाबा जी की ताकत कहीं तो प्रकट है अगर हम उनके बताए रास्ते पर चलेंगे तो आप हम पर दया करके हमें राह दिखाएंगे।

सितम्बर 1986 में बाबा जी की तबीयत बहुत खराब हो गई थी। उस समय बाबा जी ने गुरमेल सिंह और बलबन्त को बुलाकर कहा कि मैं कुछ कहना चाहता हूँ और टेप रिकार्डर मंगवाकर एक संदेश रिकार्ड करवाया। उस टेप को बलबन्त और गुरमेल सिंह ने कभी नहीं सुना क्योंकि कभी ऐसा यकीन नहीं आता था और दिल भी ऐसी बात को नहीं मानता था।

वह टेप यहाँ पर है, अभी आपको वह टेप सुनाई जाएगी। हमारी समझ में आया है कि यह बाबा जी का आखिरी हुक्मनामा है। यह संदेश बाबा जी ने पूरी संगत के लिए बोला है। हम सब भाई-बहनों के लिए यह संदेश सुनना और समझना जरूरी है।

मैं जो कुछ बोल रहा हूँ अपने गुरु सावन-कृपाल की दया से बोल रहा हूँ। जमाना बहुत खतरनाक है मन दुनिया में भटक चुके हैं, सब नाम की कमाई करने के चोर हैं लेकिन गुरु बनने के लिए सब होशियार हैं। मैंने काफी प्रेमियों को 'नामदान' दिया है। मेरे गुरुदेव ने मुझे जो मिशन चलाने के लिए कहा था मैंने वह मिशन ईमानदारी और सच्चे दिल से चलाया है।

मेरे गुरुदेव का अंदर से मेरे लिए यह हुक्म नहीं कि फलाने दिन, फलाने समय इस संसार से जाना है। सन्त ऐसे चमत्कार नहीं दिखाते, गुड़ियों का खेल नहीं करते। मैं काफी महीनों से यह सब बोलने के लिए सोच रहा था। जब मेरे गुरु सावन-कृपाल ने भी चोले छोड़े तब कई पार्टियां बनी। लोग जायदादों के लिए कोर्ट में गए। उस समय लोगों को हँसने का मौका मिला कि पूरे गुरु के शिष्य आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। मेरे गुरु कृपाल ने कहा था कि कोर्ट में न जाएं यह आपके फायदे में होगा।

मैं हमेशा ही इशारों मुताबिक अपने सेवकों को बताता रहा हूँ लेकिन अफसोस किसी ने भी इस तरफ तवज्जो नहीं दी। जिंदगी ज्यादा से ज्यादा बे-आराम हो गई है यह मशीन नहीं जो दबा-दब काम करती जाए आखिर इसकी भी कोई लिमिट होती है। मैं यह सब कुछ अपने गुरुदेव के हुक्म से बोल रहा हूँ कि कोई आदमी झूठी गुरुआई न करे और न ही कोई सतसंगी झूठे के पीछे लगे। एक-एक गलती का हिसाब देना पड़ता है।

सन्तों की बानियों से पता लगता है जैसा कि मैं बहुत से सतसंगों में कह चुका हूँ कि झूठे गुरु और झूठे शिष्यों को भी ज्यादा से ज्यादा सजा मिलती है। सुंदरदास के महाराज कृपाल के साथ जो अनुभव हुए थे उसे मिस्टर ओबराय ने किताब में लिखा

है, हर कोई वह किताब पढ़कर देख सकता है। सन्तों की लेखनियां डराने के लिए नहीं होती और न ही वे हमें लालच देते हैं।

संगत के अंदर बीज नाश नहीं होता, मुझे समझने वाले भी हैं। यहाँ आश्रम में मेरे बच्चों ने, लाला फेमिली ने बहुत सेवा की है जिसकी मैं कद्र करता हूँ। मैंने लाला को पिता बनाकर उसके साथ प्यार किया अफसोस! मैं लाला को तीस साल तक कहता रहा लेकिन उसने कोशिश नहीं की। हुजूर कृपाल कहा करते थे, ''प्यार दो तरफा होता है, एक तरफा नहीं होता। भँवरा लाट के साथ प्यार करता है लेकिन लाट को पता नहीं होता। जब भँवरा लाट के ऊपर आता है तो लाट उसे जला देती है।''

मैं अपने बच्चों की ज्यादा से ज्यादा कद्र करता हूँ। गुरमेल बलवन्त और बलवन्त का छोटा बच्चा सुखपाल इन्होंने मुझे सदा प्यार दिया। सन्तों का उसूल है अगर परमात्मा ने किसी की अमानत रखी होती है कि तू गुरुआई का काम करेगा तो सन्त उसे जरूर देते हैं। आप पृथ्वी की कहानी पढ़कर देख सकते हैं। बानी में आता है गुरु रामदास जी पृथ्वी से कहते हैं, ''पुत्र! तू बाप के साथ क्यों झगड़ता है? बड़ों के साथ झगड़ना अच्छा नहीं होता।''

मैं इतना कुछ इसलिए बोल रहा हूँ क्योंकि बाद में लोग जायदाद के लिए झगड़ते हैं जोकि मुनासिब नहीं होता। जो इतना कुछ बनाकर चला जाता है अगर वह साथ लेकर नहीं जाता तो पिछले वारिस कौन सी आशा लगाते हैं? काल कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता, हमारे मन को भटकाता है; आपस में लड़वाता है।

मैंने अपनी इस जमीन एक मुरब्बे को सरकार के घर जाकर कायदे कानून के मुताबिक अपने बच्चों के नाम लिख दिया है ताकि

बाद में कोई इन्हें परेशान न करे। ये बच्चे इस जायदाद के भूखे नहीं लेकिन मैंने अपनी जिंदगी में बहुत कुछ देखा है। बाद में जो लोग खुद भटके होते हैं वे दूसरे लोगों को भी भटका देते हैं।

मैंने अपने गुरु की दया से अपनी जिंदगी बड़े ही प्यार भरे ढ़ग से व्यतीत की है। मैंने सारी जिंदगी किसी के साथ लड़ने-झगड़ने की कोशिश नहीं की। मैंने अपने शरीर के किसी अंग से बुराई का काम नहीं लिया बेशक मेरी जिंदगी में कई तोहमतें लगी लेकिन मैंने उन तोहमतों को गुरु प्यार में स्वीकार किया। मेरे दिल में हमेशा यही रहा कि सच सच है, सच पर खड़े रहो। यही मेरे गुरु कृपाल का वाक है। मेरे दिल के अंदर कभी भी किसी से बदला लेने की भावना पैदा नहीं हुई।

मैं अपने बच्चों को यही कहकर खुश हूँ कि किसी से पूजा लेकर न खाएं। इनके पास अपनी गुजर के लिए जायदाद है, अपना कमाएं और खाएं। सतसंग बड़े शौंक से सिर्फ आश्रम के अंदर ही चला सकते हैं। अगर ये बच्चे मेरे हैं मेरे बने हैं तो मुझे बिल्कुल रोए नहीं क्योंकि मैं कोई बुराई करके नहीं जा रहा। ये मुझे तन-मन से बहुत प्यारे हैं। अगर कोई यह कहे कि मुझे बुलाया नहीं इस संस्कार में शरीक नहीं किया यह इनके बस का खेल नहीं। मैंने खुद ही इनके आगे विनती की है और मैं आशा करता हूँ कि ये जरूर इस पर पहरा देंगे।

सन्त कभी भी संसार में अपनी मढ़ियां बनवाने के लिए नहीं आते। मेरी इन्हें खास हिदायत है कि मेरी कोई जगह न बनाएं। सन्त किसी जगह से बंधे हुए नहीं होते। वे 'शब्द' में से आते हैं और जाकर 'शब्द' में ही समा जाते हैं। ऊँचे भाग्य हों तभी ऐसे

सन्त मिलते हैं। मैंने हमेशा कहा है अगर भूतों की तरह फिर इस संसार में चक्कर लगाने हैं तो सन्तों से नाम लेने का क्या फायदा?

मैं संगत के आगे यही प्रार्थना करता हूँ कि मैं छिपकर नहीं रहा न ही मेरे गुरु ने मुझे छिपने ही दिया। नाम जिंदगी का बीमा होता है। मैंने हर किसी को खुले दिल से रूहानी दौलत दी। पश्चिम से संगत आई तो मैंने उनसे यही कहा, ''प्यारेयो! कृपाल की मौज देने के लिए पैदा हुई है, ले जाओ। मुझे खुशी है कि उन लोगों ने रूहानियत की बहुत कद्र की।''

जिन प्रेमियों ने मुझे सहयोग दिया रसल प्रकिन्स, नोरमा फ्रेजर, बग्गा फेमिली, डाक्टर मौलिना, डान मेकन और भी बहुत से प्रमियों ने मुझे इंसान नहीं परमात्मा रूप समझा। मैं सबकी सिफारिश अपने गुरु के आगे करूंगा; वह बख्शिंद है दयालु है।

यह सब मैंने किसी को परेशान करने के लिए नहीं बोला। मेरी राख को मेरे खेत के अंदर ही भस्मी बनाकर डाल देना और मेरा बाकी सामान नहर में बहा देना। मेरी कोई भी जगह बनाने की कोशिश न करें अगर ये समझते हैं कि इसे अच्छे तरीके से दफनाया जाए या कोई जगह बनाई जाए तो इसका कुछ बढ़ जाएगा, ऐसा नहीं किया तो कुछ घट जाएगा। कबीर साहब कहते हैंः

जे मृतक को चंदन चढ़ाए तो मृतक से क्या फल पाए।
जे मृतक को बिष्टा में रलाए तो मृतक का क्या घट जाए।।

मैं बचपन से सदा ही इस बात को लेकर चला।

मरना भला परदेस का जहाँ न कोई माई बाप।
न रोवे न पिटिए न कोई भया उदास।।

आज सितम्बर की 5 तारीख है, रात का समय तकरीबन 9 बजे हैं। मैं फिर से कहता हूँ कि जो संगत में मजबूत रहेंगे उनकी ज्यादा से ज्यादा संभाल की जाएगी अगर मेरे जाने के बाद पार्टियों में बँट गए तो कबीर साहब का वाक है:

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई ऐ फूँक।।

मैंने जो कुछ बोला है पूर्व या पश्चिम सब प्रेमियों के लिए एक ही वचन है कि सब मजबूत रहें क्योंकि मेरे सेवक हर जगह फैले हुए हैं। मेरे गुरु ने मुझसे जितनी साधना करवाई है अगर कोई आपको इस किस्म की साधना वाला मिले तो आप बड़ी खुशी से उससे फायदा उठाएं, उस हालत में मैं भी आपकी मदद करने के लिए तैयार हूँ। झूठे के पीछे लगकर अपना जीवन बर्बाद न करें।

महाराज सावन से पूछा कि दुनिया ने बहुत सारी पार्टियां बना रखी हैं? महाराज सावन ने कहा, ''अभी तो बहुत थोड़ी पार्टियां हैं वक्त आएगा कोई शिष्य बनने के लिए तैयार नहीं होगा। सब अपने आपको गुरु साबित करेंगे कि मैं ही सच्चा हूँ।''

मैं सरकारी कागजों के अलावा प्रेम-प्यार से यह एक किस्म की वसीयत भी बोलकर जा रहा हूँ जो सदा संगत में सनद रहेगी। सारी संगत को बहुत प्यार, शुभकामनाएं।

***

16 जुलाई 1997

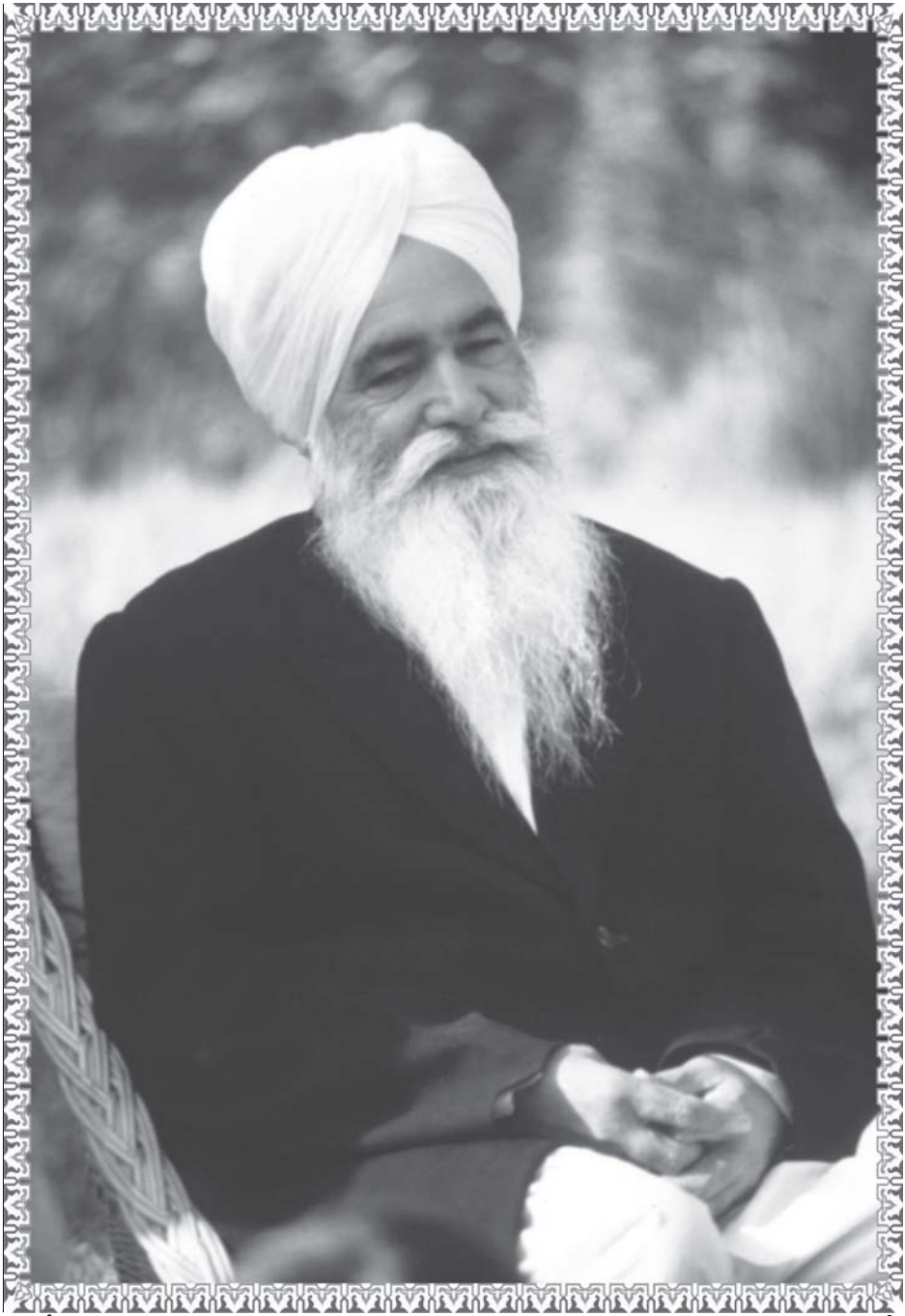

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

महात्माओं का मिशन

हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी

सुबाकोक्यू, कोलंबिया

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें भक्ति का दान दिया और यश करने का मौका दिया है। आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है।

आपने इस शब्द में सतसंग की महिमा और इंसानी जामे के फायदे बताए हैं और यह भी चेतावनी दी हैं कि इंसानी जामें का यह अवसर बार-बार हाथ नहीं आता। किसी भी व्यक्ति को पूर्ण महात्मा की शरण में जाने के लिए देरी नहीं करनी चाहिए। सब वेद-शास्त्र गाते हैं कि पूरे महात्मा और परमात्मा के बीच कोई भिन्न-भेद नहीं होता तो क्यों न हम! ऐसे महात्मा की शरण प्राप्त करके वापिस अपने घर सच्चखण्ड पहुँच जाएं।

हमें जन्म-मरण का रोग लगा हुआ है दुनिया से पार होने के लिए इसका एक ही ईलाज महात्मा का नाम है। महात्मा का नाम संजीवनी बूटी का काम करता है, यह सब बीमारियों की दवा है। चाहे सन्त-महात्मा पूर्व, पश्चिम, फारस के देशों में चाहे किसी भी युग, किसी भी वक्त पैदा हुए है चाहे उनकी जुबान अलग-अलग है लेकिन सबका निशान एक ही है। वे उसी समुद्र की बूँदे हैं जिस समुद्र में से परमात्मा ने संसार में पहले सन्त भेजे और आज भी जो महात्मा कमाई करके हमें शब्द के साथ जोड़ता है खुद शब्द रूप हो चुका है वह उसी समुद्र की बूँद है। गुरु नानकदेव कहते हैं:

ऐके हुक्म ऐके पातशाही, जुग-जुग सरकार बनाई हे।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा एक है, परमात्मा का हुक्म भी आदि-जुगादि से एक ही रहा है। सन्त-महात्मा, परमात्मा की भेजी हुई सरकारे होती हैं। पलटू साहब कहते हैं :

राम के घर में काम सब सन्ते करते।
तैंतीस करोड़ देवता सन्त ते सब ही डरते।।

परमात्मा के घर में कारकून उसके प्यारे बच्चे सन्त हैं। सन्त परमात्मा के हुक्म में आते हैं, परमात्मा के हुक्म में चलते हैं। सन्त न कोई नया समाज बनाते है न पहले की बनी समाज तोड़ते है। सन्त हर समाज, हर मुल्क को अपना घर समझते हैं।

आज तक महात्माओं का मिशन किसी वेद-पुस्तक के सहारे नहीं चला। वे वेद-शास्त्रों को तो सिर्फ अगुवाही के तौर पर पेश करते हैं कि देखो प्यारेयो! हम आपको परमात्मा का कोई नया संदेश या उपदेश नहीं दे रहे। आज तक जो भी सन्त संसार में आए सबका एक ही उपदेश और एक ही संदेश था।

किसी महात्मा ने आत्मा और परमात्मा के रिश्ते को बाप-बेटे के रिश्ते के साथ याद करवाया है। किसी महात्मा ने स्त्री और पति के रिश्ते से याद दिलाया है। किसी ने माता और पुत्र के रिश्ते के साथ याद दिलाया है। किसी महात्मा ने आकर यह संदेश दिया कि मैं ही दुनिया का प्रकाश हूँ और मेरे द्वारा ही आप मेरे पिता से मिल सकते हैं। किसी ने यह भी कहा कि जिसने बेटे के दर्शन कर लिए उसने बाप के दर्शन भी कर लिए।

किसी महात्मा ने हमें यह कहा कि आप भ्रम न पड़ें। गुरु के बिना आपको परमात्मा नहीं मिलेगा आपकी मुक्ति नहीं होगी। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिसने संसार में परमात्मा के बेटे

को आया हुआ देख लिया उसने अपना जन्म सँवार लिया, वह जन्म-मरण के बंधनों से आजाद हो गया।'' कबीर साहब कहते हैंः

राम कबीरा एक भए हैं कोई न सके पछानी।

मैं और राम एक हो गए हैं। अब मुझमें और राम में कोई भिन्न-भेद नहीं रहा। कोई यह भी नहीं पहचान सकता कि इनमें से राम कौन है और कबीर कौन है? गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं :

सन्त समूह अनेक मति के।

सन्त-महात्मा जब भी संसार में आए बेशक उनके समझाने का तरीका, भाषा अलग थी। वे समय-समय पर कई समाजों में आए लेकिन सबका निशान यह था कि परमात्मा एक है और परमात्मा से मिलने का तरीका भी एक है। परमात्मा सबके अंदर है और अंदर से ही मिल सकता है बेशक कोई कितना भी पढ़ा-लिखा, चतुर है उसे गुरु के बिना ज्ञान नहीं हो सकता; अँधेरे में भटकती हुई हमारी आत्मा को कभी रास्ता नहीं मिल सकता।

वेद-शास्त्र हमें महात्मा से मिलने और नाम प्राप्त करने के फायदे बताते हैं कि आपको नाम किसी पूर्ण महात्मा से मिलेगा। हम वेद-शास्त्र पढ़कर परमात्मा से नहीं मिल सकते अगर हम बीमार हैं और हम किसी अच्छे डॉक्टर की लिखी हुई किताब पढ़ने लग जाएं, उस किताब में नुस्खे लिखे होंगे और बीमारी का ईलाज भी लिखा होगा। चाहे हम सारा दिन उस किताब को पढ़ते जाएं तो हमारी बीमारी दूर नहीं होगी। हम जब तक किसी मौजूदा डॉक्टर के पास जाकर उससे इलाज नहीं करवाते तब तक हमारी बीमारी दूर नहीं होगी। डॉक्टर को पूरा ज्ञान होता है उसने प्रैक्टिस की होती है इसलिए हमें जीवित डॉक्टर की जरूरत पड़ती है।

इसी तरह परमात्मा से मिलने के लिए हमें किसी जीवित महापुरुष के चरणों में जाने की जरूरत पड़ती है।

गुरु कृपाल मेरे घर आना, (2)
जैसे तुम सावन दीवाने, मैं तेरा दीवाना, (2) (2)

1. एक बार भी सच्चे मन से, जिसने तुझे ध्याया,
भर–भर झोली दोनों हाथों, तुमने प्यार लुटाया, (2)
मेरी डोर तुम्हारे हाथों, तुम मेरे जीवन साथी, (2)
तुम भक्तों के भक्त तुम्हारे, ठीक नहीं मुझको ठुकराना, (2)
मैं तेरा दीवाना .....

2. शिबरी के जूठे बेरों से प्यारे, तुमने मजा उठाया,
दुर्योधन के मेवे तज के, साग विदुर का खाया, (2)
केवल दास नहीं हूँ सतगुरु, मैं दासों का दास तुम्हारे, (2)
जैसे सबकी लाज रखी है, मेरी भी लाज रखाना, (2)
मैं तेरा दीवाना .....

3. कैसे तुम्हें बुलाऊं सतगुरु, पता नहीं है ज्ञान नहीं,
किसी तरह का कोई तुकब्बर, मेरे बस की बात नहीं, (2)
पल–पल के दर्शन को गुरु जी, प्यासी आंखें तरस रही हैं, (2)
यही बेनती है 'अजायब' की, मुझे नहीं तड़पाना, (2)
मैं तेरा दीवाना .....

स्वामी जी महाराज पहले सतसंग के मुत्तलिक समझाते हैं फिर इंसानी जामे के फायदे बताते हैं कि इंसान का जामा बार-बार नहीं मिलेगा। सन्तमत कोई समाज नहीं है न इसे किसी मजहब की शक्ल देनी चाहिए यह तो अपने आपको सुधारने का मत है।

हमें अपने आपको उस वक्त सुधरा हुआ समझना चाहिए जब हम अपने सारे ऐब छोड़ दें। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जब हमारे अंदर किसी के लिए ईर्ष्या समाप्त हो जाती है हमें दोस्त

और दुश्मन के अंदर एक ही परमात्मा नजर आता है उस वक्त आप समझ लें कि हमारे ऊपर सतसंग का असर हो गया है।''

जब दोस्त और दुश्मन के अंदर एक ही परमात्मा है तो हम किसी की निन्दा नहीं कर सकते। हमारा हौंमे से छुटकारा हो जाता है क्योंकि सबको देने वाला परमात्मा है अगर परमात्मा किसी को दिल खोलकर देता है तो हम ईर्ष्या क्यों करें? जब हम अपने अंदर गुरु की मूरत, गुरु का प्यारा स्वरूप देख लेते हैं फिर हमें वह प्यारा सबके अंदर नजर आता है बल्कि हम उसे देख-देखकर हैरान होते हैं कि वह बाहर तो एक इंसान के जामे में हैं लेकिन हमें गुरु की प्यारी मन-मोहनी मूरत हर एक के अंदर नजर आती है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

बिसर गई सब तात पराई जब ते साध संगत मोहे पाई।
न को वैरी न ही बेगाना सगल संग हमको बन आई ।
सब में रव रहा प्रभ ऐको पेख पेख नानक बिगसाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप सतसंग में जाते हैं तो इस तरह का सतसंग करें जिससे आपका मन निर्मल हो जाए। आप मन को समझाने के लिए सतसंग में जाते हैं अगर आपका मन विषय-विकारों में फिरता है, घर के कारोबार में फिरता है या दुनिया के साथ झगड़ता फिरता है और आप तन को महात्मा की संगत में लेकर बैठे हैं तो किस तरह आपकी आत्मा पर रंग चढ़ेगा?'' कबीर साहब कहते हैंः

मन दिया कहीं और को तन साधा के संग।
कहे कबीर कैसे लगे कोरी गज्जी रंग।।

करो री कोई सतसंग आज बनाय।।
नर देही तुम दुर्लभ पाई। अस औसर फिर मिले न आय।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आपको इंसान की देह बड़ा सुंदर मौका मिला है यह बार-बार नहीं मिलेगा। पशु-पक्षी, गाय-भैंस, घोड़े-घोड़ियाँ या कोई जानवर साँप इत्यादि सतसंग नहीं कर सकते। सतसंग देवी-देवताओं को भी नसीब नहीं होता वे भी लोचते हैं कि हमें इंसान का जामा मिले, हम पूर्ण महात्मा की संगत में जाकर नामदान प्राप्त करें।'' कबीर साहब कहते हैः

इस देही को सिमरे देव, सा देही भज हर की सेव।
भजो गोविंद भूल मत जाओ, मानस जन्म का ऐही लाहो।।

आप कहते हैं कि जब एक बार फल पककर जमीन पर गिर जाता है फिर हम जितनी मर्जी कोशिश कर लें हम उसे डाली के साथ नहीं लगा सकते। कबीर साहब कहते हैंः

मानस जन्म दुर्लभ है होत ना बारम्बार।
ज्यों वन फल पके भौंहे गिरे बोहर ना लग्गे डार।।

मछली को जाल याद नहीं रहता वह बड़ी खुशी से तारियाँ लगाती है लेकिन उस वक्त पता लगता है जब जाल में फँसकर कीमा-कीमा होकर उसे लोगों के पेट में जाना पड़ता है। प्यारेयो! बेशक हम मौत को भूले बैठे हैं लेकिन मौत का देवता नहीं भूलता। पता नहीं! किस जगह ऐक्सिडेंट हो जाना है, कब साँस की गति-विधी रूक जानी है, कब मौत की घंटी बज जानी है?

तिरिया सुत धन धाम बड़ाई। यह सुख फिर दुख मूल दिखाय।।

स्वामी जी महाराज हमें प्यार से बताते हैं कि आपने यहाँ सुख के लिए साधन बनाए हैं। औरत ने मर्द को साथी बनाया है वह मालिक को भूली बैठी है। मर्द ने औरत को साथी बनाया है वह उससे खुशी प्राप्त करता है शायद! यह खुशियाँ सदा ही रहेंगी। अच्छे महल बनाए हैं कि मैंने सदा यहाँ रहना है। जब मौत आती है औरत देखती रह जाती है पति चला जाता है, पति देखता रह जाता है औरत चली जाती है। बाल-बच्चे हमारे साथ नहीं जाते यहाँ तक कि यह तन भी हमारे साथ नहीं जाता। फरीद साहब कहते हैंः

कित्थे तैंडे माँ प्यो जिन्हीं तू जंणया ओए।
तें पासों ओ लद गए तू अजे न पतिन्या ओए।।

हमारे माता-पिता, दादा-परदादा जिन मकानों से, पति-पत्नियों से, बाप-बच्चों से प्यार करते थे जब मौत आई तो वे सारा सामान यहीं छोड़ गए। जब उनके साथ कुछ नहीं गया तो हम कौन-सी आशा रखकर बैठे हैं? शायद! हम इनका बीमा करवाकर ले जाएंगे। हम सोचते हैं वे भूल गए हैं हम जाते वक्त इन्हें जरूर साथ ले जाऐंगे। कबीर साहब कहते हैंः

कहे कबीर चले जुआरी दोए हाथ झाड़।

जिस तरह जुआ खेलने वाला शाम को खाली हाथ घर आ जाता है हमारी भी यही हालत है। इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ पसारकर चला जाता है।

या से बचो गहो गुरु सरना। सतसंग में तुम बैठो जाय।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर आप काल के पंजे से, मौत के पंजे से बचना चाहते हैं तो पूरे महात्मा की शरण लेते वक्त देर न करें। महात्मा की संगत में जाते वक्त सोचें न आपको जो मौका मिलता है उनकी संगत से फायदा उठाएं।''

यह सब खेल रैन का सुपना। मैं तुम को अब दिया जगाय।।

स्वामी जी महाराज और सभी सन्त इस संसार को और संसार के पदार्थों को रात के स्वपन के साथ तुलना देते हैं। रात को थोड़े समय के लिए स्वपन आता है जिसे हम सच समझते हैं, जब आँख खुलती है तो वहाँ कुछ भी नहीं होता। यह जिन्दगी दस, बीस, पचास, सौ साल की होती है आखिर जब मौत आती है उस वक्त ही आँख खुलती है।

झूठी काया झूठी माया। झूठा मन जो रहा लुभाय।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमारी काया झूठी है, नाश होने वाली है यह रेत की दीवार जैसी है। माया वृक्ष की छाया जैसी है जो आज इस जगह है कल किसी और जगह है। हमें हमारा मन इनके बीच लुभाएमान किए रखता है, यह सारा मन का खेल है।''

सतसंग सच्चा सतगुरु सच्चा। नाम सचाई क्या कहुँ गाय।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''कौन सी चीज सच्ची है? सच का भाव जो कभी नाश न हो कभी फनाह न हो। नाम रूपी महात्मा सच्चा है उसकी संगत सच्ची है जो कभी नाश नहीं होती फनाह

नहीं होती।'' नाम की महिमा ब्यान नहीं की जा सकती क्योंकि ऐसे महात्मा नाम में से आते हैं, नाम का प्रचार करते हैं और नाम में ही जाकर समा जाते हैं। हम जो चीज़ लहर के सुपुर्द कर देते हैं वह समुंद्र की तह में जाकर बैठ जाती है।

मान बचन मेरा तू सजनी। जन्म मरन तेरा छुट जाय।।

स्वामी जी महाराज शरीर में सोई हुई कैद आत्मा को संदेश देते हैं कि हे प्यारी बच्ची! तू मेरा वचन मान। तू पूर्ण महात्मा की शरण में जाकर नामदान प्राप्त कर। महात्मा की संगत में जाने के लिए आलस्य न कर। तेरे जन्म-मरण को काटने के लिए ही महात्मा परमात्मा की तरफ से आते हैं।

नभ चढ़ चलो शब्द में पेलो। राधास्वामी कहत बुझाय।।

स्वामी जी महाराज ने हमें इस छोटे से शब्द में प्यार से बताया है कि आप सोच-समझकर सतसंग करें। जिस मन को समझाना है उस मन को भी सतसंग में लेकर बैठें। सतसंग में आकर हमारे अंदर जो कमियाँ हैं उन्हें जरूर छोड़ना चाहिए, अपना सुधार करना चाहिए। हमारी काया झूठी है, दुनिया के पदार्थ झूठे हैं और हमारा मन हमें इनमें लुभाकर बैठा है, यह खुद झूठा है और सच प्रतीत करवाता है।

पूर्ण महात्मा सच्चा है। पूर्ण महात्मा की संगत सच्ची है। महात्मा हमें नाम का तोहफा देते हैं। नाम सच्चा है, नाम ने कभी नाश नहीं होना, कभी फनाह नहीं होना।

आखिर में स्वामी जी महाराज एक ही हिदायत करते हैं कि आप महात्मा के शब्द-नाम के बेड़े में बैठकर भवसागर से पार होकर अपने घर पहुँचें। ***

13 जून 1995

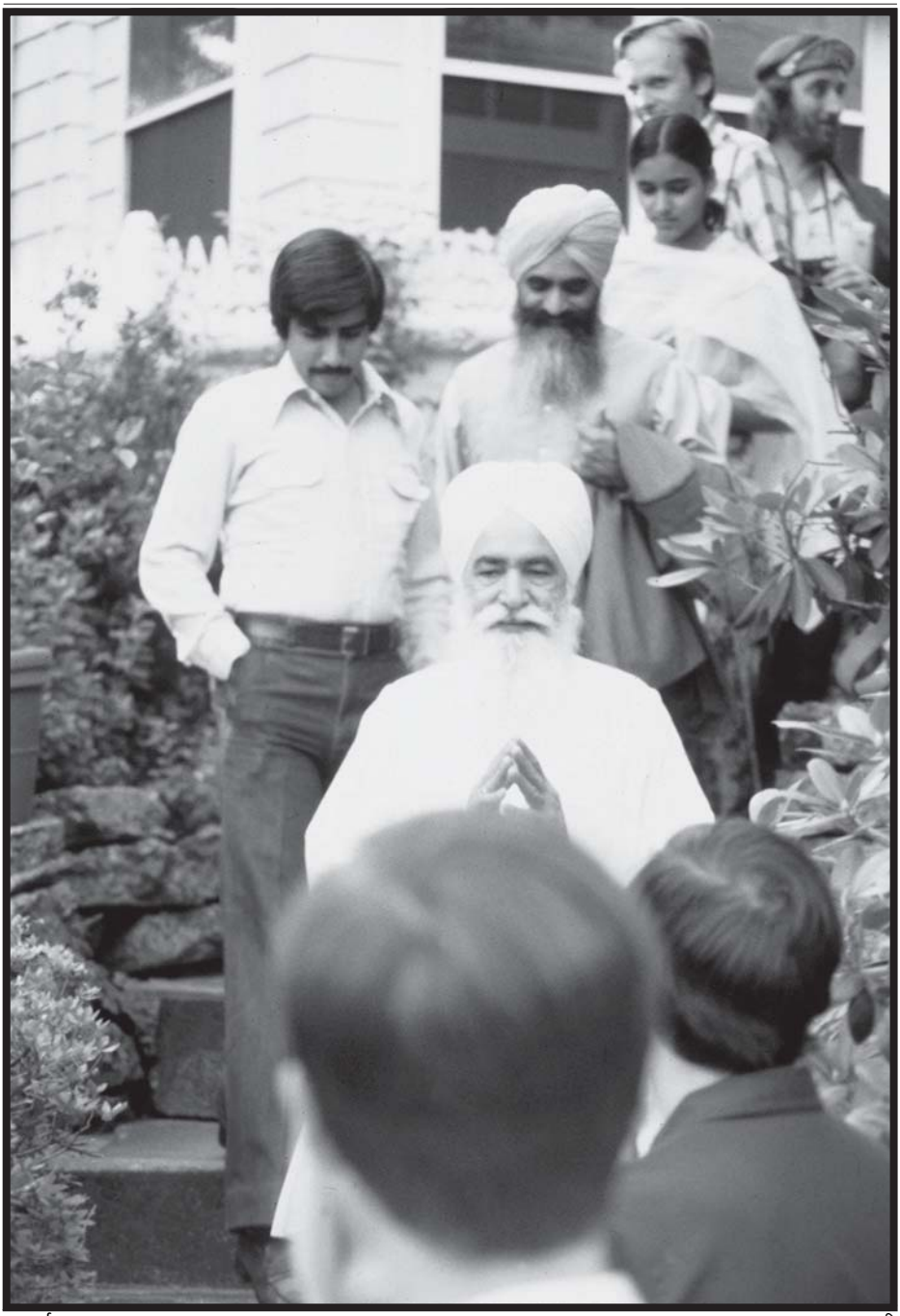

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारबिन्द से

धैर्य रखें और वक्त का इन्तज़ार करें

न्यूयॉर्क

आपमें से ज्यादातर लोगों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बहुत मेहनत की है। यह कार्यक्रम गुरु की दया और आपकी मेहनत से सफल हो सका। मैं आप सबका आभारी हूँ और आपकी प्यार भरी सेवा के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ।

आप सब जानते हैं कि इस दुनिया में मेरा अपना कोई मिशन नहीं। मैं यहाँ-वहाँ अपने किसी मिशन की वजह से नहीं जाता। यह महाराज कृपाल का मिशन है और मैं जो भी कर रहा हूँ वह अपने गुरु महाराज कृपाल के लिए कर रहा हूँ। महाराज कृपाल ने मुझे जो प्यार दिया है मैं केवल उस प्यार और उनके संदेश को देने के लिए ही यहाँ आया हूँ।

मैंने कई बार कहा है कि परमात्मा कृपाल प्यार का सागर हैं, मैं प्यार का भक्त हूँ। उन्होंने मुझे प्यार दिया और मुझसे कहा कि मैं प्रेमियों के पास जाकर उन्हें यह प्यार दूँ। दुनिया में प्यार देने के अलावा मेरा अपना कोई मिशन नहीं। यह प्यार मुझे मेरे प्यारे परमात्मा कृपाल से मिला है। जब हम खुद पर दया करें तभी हम उनका नाम रोशन कर सकते हैं, उनका यश गा सकते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने अपने शिष्य गुरु अंगददेव जी को हर तरीके से पूर्ण बनाया लेकिन फिर भी गुरु अंगददेव, गुरु नानकदेव जी के शरीर छोड़ने के बाद गुरु नानकदेव जी के एक पुराने शिष्य के साथ रहा करते थे ताकि उस शिष्य से अंगददेव जी अपने गुरु नानकदेव जी के बारे में कुछ सुन सकें।

एक दिन गुरु कृपाल ने मुझसे कहा, ''मैं जंगल में रहना चाहता था, मैं एक त्यागी था। मुझे जंगल और उजाड़ जगह पर रहना पसंद था लेकिन मैं यह सब इसलिए नहीं कर सका क्योंकि मुझे मेरे गुरु सावन ने ऐसा करने के लिए मना किया था।'' महाराज सावन सिंह जी ने अपने आखिरी समय में मुझे बुलाया और कहा, ''सुनो कृपाल! इस दुनिया में थ्योरी समझाने वाले बहुत लोग मिल जाएंगे लेकिन इस दुनिया में आप जैसा कोई नहीं जो इसका प्रैक्टिकल करवा सके और इस सच्चाई को दुनिया में फैला सके। तुमने ध्यान देना है, मेरी शिक्षा को जारी रखना है कहीं मेरी शिक्षा दुनिया से दूर न हो जाए।'' असल में उसी को गुरु का सच्चा शिष्य कहा जा सकता है जो गुरु के नाम को रोशन करे और गुरु के काम को जारी रखे।

महाराज कृपाल अक्सर एक मालिक के दो नौकरों की कहानी सुनाया करते थे। एक नौकर मालिक के गुण गाता और अपने मालिक को देखकर उसके आगे नाचने लग जाता लेकिन मालिक के जाने के बाद कोई काम नहीं करता था। दूसरा नौकर बागों की देखभाल करता और मालिक के न होने पर भी पूरे दिल से काम करता। आप सोचकर देखें! मालिक किससे ज्यादा खुश होगा?

इसी तरह जब हमारे गुरु चले गए हैं, उनके जाने के बाद हमारे ऊपर बहुत जिम्मेवारियाँ हैं। उन्होंने हमें करने के लिए जो काम दिया है वह भजन-अभ्यास है। हम अभ्यास करें और सारी इंसानियत के साथ ज्यादा से ज्यादा प्यार करें।

मुझे इस दुनिया में कोई रुचि नहीं क्योंकि मैं कभी भी दुनियावी चीजों में नहीं पड़ा। मैंने अपने जीवन का सबसे मूल्यवान हिस्सा जमीन के नीचे बैठकर परमात्मा की भक्ति में लगाया है। मैं परमात्मा

को कभी नहीं भूला। आप जानते हैं कि मैं बाहर कैसे आया? रसल प्रकिन्स बहुत मेहनत करके मेरे पास आया और उसने मुझे बाहर निकाला। आप जानते हैं कि यह सब कितना मुश्किल था। मैं हमेशा सोचता था कि मैं कभी बाहर नहीं आऊँगा क्योंकि मुझे इस दुनिया में कोई रुचि नहीं है।

मैं जब बाहर आया तब मैंने रसल प्रकिन्स से कहा, ''आपको पता है कि जिसने अभ्यास किया है वही अभ्यास की कीमत जानता है। अभ्यास को खो देना बहुत आसान है। अगर आप चाहते हैं कि मैं बाहर आऊं तो मैं बाहर आ जाऊँगा लेकिन आपको वायदा करना होगा कि आप कभी किसी की बुराई नहीं करेंगे।''

मैं रसल प्रकिन्स से बहुत खुश हूँ क्योंकि उसने अपना वचन निभाया। उसने कभी किसी की बुराई, निन्दा नहीं की। आप सन्तबानी मैगज़ीन पढ़ते हैं उसमें आपको मैगजीन में दूसरों के लिए निन्दा का एक शब्द भी नहीं मिलेगा।

मेरे प्यारे कृपाल ने मुझसे कहा था, ''अगर बुरा बुराई नहीं छोड़ता तो भला भलाई क्यों छोड़े?'' स्वार्थी लोग हमेशा ही बहाने ढूंढ़ते हैं और खुद को सच्चा साबित करने के लिए बहस करते हैं लेकिन बुद्धिमान लोग ऐसा नहीं करते। वे वक्त का इन्तज़ार करते हैं। हमें भी बुद्धिमान लोगों की तरह वक्त का इन्तज़ार करना चाहिए। वक्त बताता है कि कौन सच्चा है।

हमें धैर्यवान बनना चाहिए और वक्त का इंतज़ार करना चाहिए। हमें अपना अभ्यास करते रहना चाहिए। हमें उन लोगों के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो गलत राह पर जा रहे हैं; उन्हें जाने दें। वक्त उन्हें वापिस ले आएगा, गुरु उन्हें वापिस ले आएंगे।

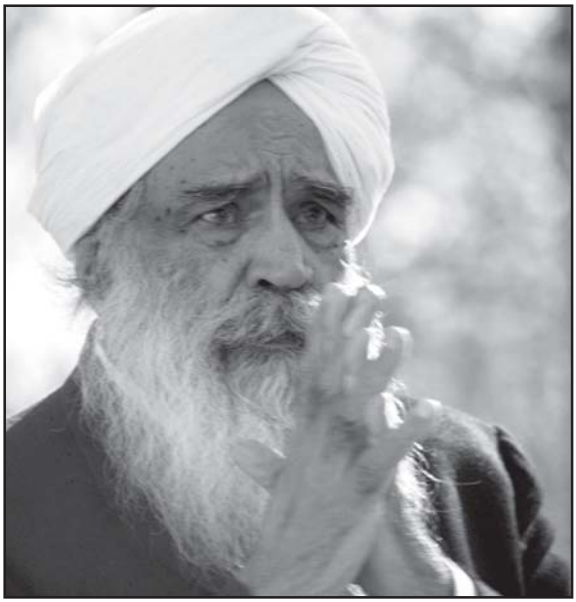

हमारे लिए यह कहना ठीक नहीं है कि महाराज कृपाल के जाने के बाद उनका कोई पूर्ण शिष्य इस दुनिया में नहीं है। अगर हम ऐसा कह रहे हैं तो हम यह कहना चाहते हैं कि हमारे गुरु के पास नाम का खज़ाना था लेकिन वह एक भी ऐसा शिष्य नहीं बना सके जितने पूर्ण वे खुद थे। अगर हम यह कहते हैं कि महाराज कृपाल के बाद कोई नहीं तो हम उनके प्रति बेईमान होंगे और हमारे लिए ऐसा करना अच्छा नहीं है।

हमारे प्यारे कृपाल भक्ति के शहंशाह थे, आप सर्व-मालिक थे। यह सच है कि आप परमात्मा कृपाल के शरीर में आए और हमारे बीच आकर रहे। जिन प्रेमियों ने महाराज कृपाल का कहना माना और अपने जीवन को उनके कहे अनुसार ढ़ाला उन्होंने महाराज कृपाल से इस दुनिया में आने का लाभ उठाया।

हमने दुनिया में उनके मिशन को जारी रखना है, उनके नाम को रोशन करना हैं, उनकी आज्ञा का पालन करना है। हमारे अंदर एक-दूसरे के लिए प्यार होना चाहिए क्योंकि हम सभी उनके प्यार में, उनके नाम में, उनके बच्चे हैं। मैं फिर से आप सबका धन्यवाद करता हूँ कि आप पूरे दिल से भजन-अभ्यास करते रहें।

***

25 जुलाई 1980

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को एक संदेश

विदाई संदेश

जयपुर

हम सबसे पहले अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के धन्यवादी हैं जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। यह उन महान महापुरुषों की दया ही है कि हमें परमात्मा की याद में जुड़कर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनकी याद में बहुत अच्छा प्रोग्राम गुजरा।

जब मैं पिछली बार जयपुर आया था तो मेरी वजह से आपके दिलों को काफी ठेस पहुँची। मैं बहुत बीमार हो गया था और मुझे अस्पताल जाना पड़ा। इस बार भी दिल काफी परेशान था लेकिन परमात्मा कृपाल की कृपा से मैं बहुत प्यार और श्रद्धा से आपकी सेवा कर सका इसलिए मैं बार-बार उनका धन्यवाद करता हूँ।

मुझे आपके साथ समय बिताकर बहुत खुशी हुई। सन्तों को संगत अपनी जान से प्यारी होती है। किसी को बिछोड़ने के लिए दिल नहीं करता लेकिन सन्त कहते हैं, ''हमें कर्मों के मुताबिक अपने घरों की जो जिम्मेवारियां मिली हैं हम उन्हें पूरा करें। अपने बाल-बच्चों को, कारोबार को छोड़कर न भागें। अपने घरों में रहते हुए मालिक की भक्ति के लिए भी टाईम निकालें।''

मैं हर सतसंग में आपको महाराज कृपाल का वाक याद दिलाया करता हूँ, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं। आप जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे लेते तब तक तन को खुराक न दें। तन की खुराक अन्न है, आत्मा की खुराक भजन-सिमरन, शब्द-नाम की कमाई है।''

हम रूहानियत में दिवालियपन पर हैं। हमारी आत्मा कमजोर है और हमारे अंदर आत्मिक बल भी नहीं है इसलिए हम एक-दूसरे की बात को बर्दाशत नहीं करते परेशान हो जाते हैं अगर हम रोज-रोज 'शब्द-नाम' की कमाई करेंगे तो हमारे अंदर सब्र, आत्मिक बल, सहन शक्ति के गुण अपने आप पैदा हो जाएंगे। हमारे कर्मों की वजह से कभी कोई सख्त वक्त भी आ जाता है हमें उसे भाणां समझकर मान लेना चाहिए; सच तो यह है कि उसका भाणां टलता नहीं तो क्यों न उस भाणे को प्यार से भोगा जाए! सभी सन्तों ने दुनिया में पुकार-पुकार कर यही होका दिया है:

घट घट में हर जिओ, बसया सन्तन कहयो पुकार।

गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''हर औरत-मर्द, पशु-पक्षी हर मुल्क और हर जाति में परमात्मा समाया हुआ है।'' सबको परमात्मा से मिलने का साधन-तरीका समझाया गया है आशा करते हैं कि आप अपने देश में जाकर श्रद्धा प्यार से कमाई करेंगे।

यहाँ जयपुर के प्रेमियों ने सतसंग के कार्यक्रम में तन, मन, धन से सेवा की, सहयोग दिया हम सबके धन्यवादी हैं। जिन्होंने बाहर से आकर यहाँ की सफाई रखी, बीबीयों ने लंगर तैयार किया और भाईयों ने लंगर बरताया है। कभी किसी सेवक से सेवा करते हुए गलती भी हो जाती है। आशा करते हैं कोई किसी के प्रति मन में अभाव लेकर न जाएं, प्यार ही लेकर जाएं।

एक-दूसरे की इज्जत करना हर सतसंगी का धर्म है। आपने रास्ते में सिमरन करते हुए जाना है अगर आप रास्ते में गप-शप लगाएंगे या निन्दा-चुगली करेंगे तो आप समझ लें कि काल ने आपको भटका दिया है। आपने इस प्रोग्राम में यहाँ जो कमाया है उसके ऊपर कालिख का पर्दा चढ़ जाएगा।

मैं आप सबकी वापसी यात्रा की शुभकामना करता हूँ और यह भी आशा करता हूँ कि जब फिर परमात्मा कृपाल मौका देंगे तो इसी तरह हम सब मिलकर प्यार से सेवा करेंगे। हमने जब इस हॉल से चलना है तो इसकी सफाई करके जाना है। जिस तरह संगत के आने से पहले यहाँ सफाई की जाती है ताकि इन प्यारों को भी पता लगे कि हमें सन्तों ने कितनी जिम्मेवारी समझाई हुई है।

मैं बताया करता हूँ कि आर्मी बेशक रेगिस्तान में बैठी हो जहाँ आर्मी वाले तम्बू लगाते हैं आरजी रात काटते हैं। वे वहाँ पूरे अनुशासन में रहते हैं वहाँ बोर्ड लगा देते हैं कि हम यहाँ बैठे हैं। उस जगह अपना पहरेदार खड़ा कर देते हैं। जब वे वहाँ से जाते हैं तो उस जगह को उसी तरह साफ करके जाते हैं। वे इस तरह नहीं करते जिस तरह जमींदार खेतों में जहाँ मर्जी गंद फैंक देते हैं।

जब मैं पहली बार अमेरिका गया, मैं बीमार हो गया। वहाँ के प्रेमियों ने सोचा कि सन्तों को राजस्थान की तस्वीरें दिखाएं तो इन्हें अपने हिन्दुस्तान की तस्वीरें देखकर दिल को ढ़ाढस मिलेगी। उसमें एक ऐसी तस्वीर भी थी जैसा कि हमारे हिन्दुस्तान में लोगों को आदत होती है कि वे कोई पर्दा नहीं करते, वह आदमी नंगा ही बैठा हुआ था। जब वह पिक्चर आई तो वहाँ का प्रेमी हँसकर कहने लगा कि यह हिन्दुस्तान का बाथरूम है।

प्यारेयो! मैं हिन्दुस्तान में पैदा हुआ हूँ। सन्तों के दिल में सब मुल्कों की इज्जत होती है वे सब मुल्कों को अपना घर समझते हैं लेकिन जहाँ पैदा होते हैं वहाँ के लिए कुछ न कुछ झुकाव होता है।

***

15 मार्च 1994

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सच और झूठ

एक पंडित राजदरबार में कथा किया करता था, वह राजा का दरबारी पंडित था। एक दिन कथा करने के बाद उसकी निगाह राजकन्या पर चली गई। उसके दिल में ख्याल आया कि मैं इस कन्या को कैसे हासिल करूँ? हम जानते हैं कि वाचक ज्ञानियों का क्या हाल होता है? जब काम का वेग आता है तो यह सारी अक्लें गुम कर देता है। यह सोचता हुआ वह अपने घर चला गया।

अगले दिन पंडित जब कथा करने आया तो वह उदास और परेशान था। राजा ने उससे पूछा, ''पंडित जी! आप उदास क्यों हैं?'' पहले तो पंडित चुप रहा। राजा के प्यार से पूछने पर बोला, ''आपको क्या बताऊं? मुँह छोटा और बात बड़ी है। मैंने ज्योतिष विद्या लगाकर देखा है कि आपके ऊपर बहुत कठिन साढ़े-सत्ती आने वाली है, जिससे आपको बहुत कष्ट होगा। मैंने आपका नमक खाया है मैं आपको दुखी कैसे देख सकता हूँ?''

राजा ने पूछा, ''इसका कोई उपाय बताओ।'' पंडित ने कहा, ''इसका उपाय है लेकिन आपके लिए करना बहुत मुश्किल है।'' राजा ने कहा, ''पंडित जी! बताओ।'' पंडित ने कहा, ''एक अच्छा संदूक, जिसमें हवा भी न जाए, उसमें अपनी राजकन्या और उसे जो भी दान-दहेज देना चाहते हैं साथ में कुछ दिनों का खाना रखकर उस संदूक को दरिया में बहा देने से आपकी साढ़े-सत्ती टल जाएगी।'' राजा ने उसी तरह रात को संदूक दरिया में बहा दिया, जिसके बारे में और किसी को भी पता नहीं था।

पंडित ने अपने साथियों को बताया कि दरिया में जो संदूक बहा जा रहा है, इसमें बहुत धन-पदार्थ है। हम इसे बाहर निकाल लेते हैं। जब उन्होंने संदूक बाहर निकाल लिया तो पंडित ने उनसे कहा कि अगर हम इस संदूक को अभी खोलेंगे तो कोई देख लेगा। हम इसे छिपाकर रख देते हैं, एक दो दिन बाद खोलेंगे।

वहाँ एक राजा शिकार खेलता हुआ आया। उसने देखा कि जंगल में संदूक छिपाकर क्यों रखा गया है! जब राजा ने संदूक खोला तो देखा कि उसमें एक सुंदर राजकन्या बैठी थी। राजकन्या ने पंडित की सारी करतूत राजा को बताई। राजा ने संदूक में से राजकन्या और उसमें रखा हुआ दान-दहेज का सोना-चाँदी व सब धन-पदार्थ निकाल लिया। राजा के पास एक भालू था उसने उस भालू को संदूक में कैद कर दिया।

पंडित जी रात को अकेले ही अपनी कामना पूरी करने के लिए जंगल में आ गए। संदूक में कैद भालू गुस्से में था। जैसे ही पंडित ने संदूक खोला, भालू उस पर झपटा और पंडित को खा गया। राजकन्या की परमात्मा ने रक्षा की, उसे राजा के घर भेज दिया। बेशक पंडित जानता था कि झूठ बोलना अच्छा नहीं फिर भी वह लालचवश झूठ बोलने से नहीं हटा। ***

धन्य अजायब

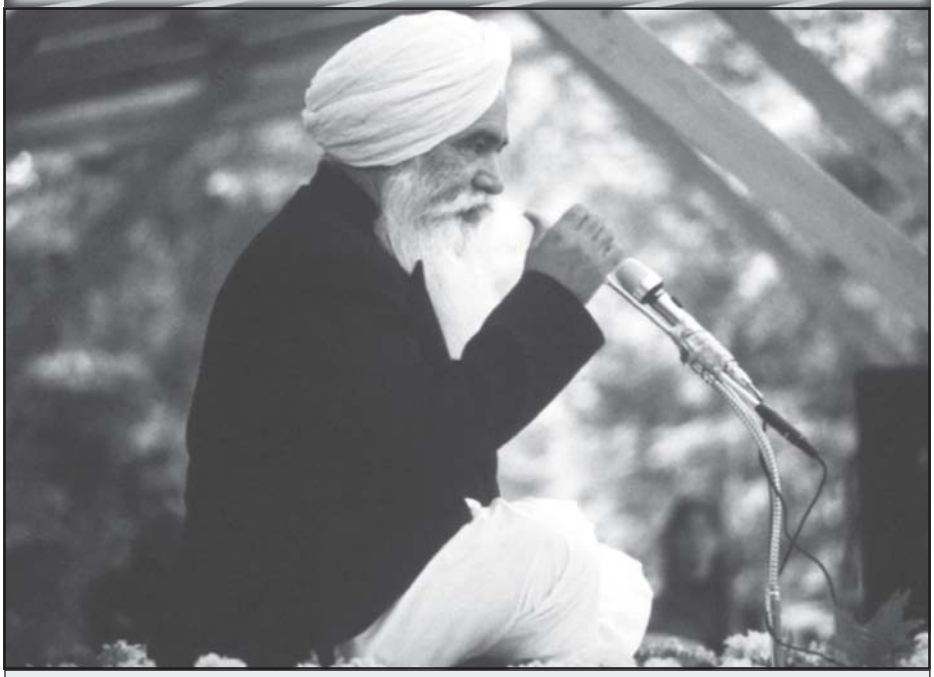

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

05 से 07 अगस्त 2016

07 से 11 सितम्बर 2016

28 से 30 अक्टूबर 2016

25 से 27 नवम्बर 2016

23 से 25 दिसम्बर 2016